[श्रीमती चन्द्र कला पाण्डेय]

रूप में अपनी बेटियों को दे रहे हैं, दूसरी ओर गरीब मां-बाप या तो बेटी का विवाह करने में खुद को असमर्थ पा रहे हैं या करते भी हैं तो उनकी बटी कम दहेज लाने के लिए सुसराल में इतनी सताई जाती है कि उसे जिंदगी की तुलना में मौत अधिक शांतिदायक लगती है और वह अपने अनमोल जीवन को समाप्त कर देती है ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदया, गत 9 मई की रात को दिल्ली साऊथ अनारकली में बलजीत कौर की आत्महत्या इस बात का प्रमाण है । शादी के कुछ दिन बाद ही उसकी सुसराल वालों ने उसे दहेज के लिए सताना शुरु कर दिया था। मारपीट और धमकी से त्रस्त बलजीत ने 9 मई 4-00 P.M. की रात फांसी लगा ली। उससे निरंतर एक लाख रुपए और स्कूटर की मांग की जा रही थी। बलजीत के रिश्तेदारों के बयान पर एस०डी०एम० ने कृष्ण नगर थाने की पुलिस को दहेज-हत्या का मामला दर्ज करने का आदेश जरुर दिया है, पर मैं मंत्री महोदय से अनुरोध करती हूं कि बलजीत को मरने के लिए मजबूर करने वालों के खिलाफ कोई सख्त कारंवाई की जाए ।

9 मई की ही रात को गुड़गांव में खुद को जलाकर मार डालने वाली वीरवती के पिता ने भी अस्पताल में बयान दिया है कि उनकी बेटी को लगातार एक स्कूटर और कुछ नकद रकम उपहार के रूप मे मांग लेने के लिए धमकाया गया था। इस घटना की भी पर्याप्त जांच के लिए मैं मंत्री महोदय से आश्वासन चाहती हूं। मैं चाहती हूं कि सरकार कोई ऐसी व्यवस्था करे जिससे "विवाह" शब्द के साथ "मौत का पैगाम" भविष्य में न जुड़े । धन्यवाद ।

Right of Tamil Nadu on Kannari Temple

SHRI S. MUTHU MANI (Tamil Nadu): Madam, I wish to urge upon the Centre to intervene immediately in order to safeguard the right of Tamil Nadu on Kannaki Temple, situated on the border of Tamil Nadu and Kerala.

Kannaki is the celebrated heroine of the Tamil epic, Silappathikaram, who shook the Pandian Kingdom, in her quest for justice. Kannaki epitomises the rich Tamil cultural heritage and her memory is sacred to all the Tamiiians.

There is an ancient Kannaki temple on Kumuli hills on Tamil Nadu-Kerala border, near Gudalur in Madurai district of Tamil Nadu. From, time immemorial people from all over Tamil Nadu used to visit that temple throughout the year. They also used to celebrate Chitra Paumami festival for three days in the temple.

But, in the year 1982, the Govern ment of Kerala encroached upon the temple and since then it has been slow ly curtailing the rights of the Tamiiians to visit the temple. According to the available history and survey of the Department of Forest as also the surveys of the Centre and State, the temple falls within Tamil Nadu limits. Yet. for the last 12 years the Government of Kerala is unmoved and, on the contrary, has been constructing guest houses and watch—towers to make a claim on the temple. It has gone to the extent of putting severe restriction"! on the pilgrims as though the Tamilian* are foreigners. Now, Tamilians are allowed entry into the temple area only once a year during Chitra Paumami. They are still not permitted to celebrate it for three days as they did earlier. When thousands of people went to celebrate the occasion on 25th April this year, they were allowed to be in the temple premises only for one day. Even on that day they were allowed only after 10.00 A.M. and were asked to vacate the premises before 6.00 P.M. The nilerims were not allowed to make decorations, to prenare "pongal" and to go around freelv. The Kerala Government had imnosed sixteen conditions on them. Fortunately it had not imposed any tax on Tamilians.

Here. I wish to recall that it was this enic drema Silannathikaram which was schedule to be telecast bv the Door-

darshan from February this year. But tul date nothing has come out. I dont know the reason for the delay. This Silappathikaram is as important as Mahabharatam and Ramayanam to Tam-iiiuns. By encroaching upon the temple of that epic heroine, the Kerala Government is wounding the sentiments of the Tanuiians. Since the Tamil Nadu Government pursues a policy of friendliness and believes in the dictum, "love thy neighbour", it has not taken up a confrontationist attitude. But, since the feelings of the people are hurt, there is tension in the area. So, I request the Centre to prevail upon the Kerala Government, to make it see reason and to hand over the possession of Kannagi Temple to Tamil Nadu.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): I would like to take the sense of the House because there are still five Members in the list today. If you wish, we can go ahead with them today; otherwise, we can take them up tomorrow. Then we can take up the Health Ministry for discussion to-

गौतम जी, आपका क्या कहना है ?

day.

पांच ही मेम्बर बचे हैं, अगर आप कहते हैं कि पांच मैम्बर्स को आज लेना है तो आज ही लेते हैं. . .

एक माननीय सदस्य: दो-दो मिनट में हो ज

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): आप लोग अगर दो-दो मिनट में खत्म करें तब तो आज हो सकता है ।

श्रीमती मालती शर्मा (उत्तर प्रदेश): मुझे तो केवल डेढ़ मिनट ही लेना है ।

SHRIMATI JAYANTHI NATARA-JAN (Tamil Nadu): Madam, I have no objection. The only problem is that while we can take up the Special Mentions tomorrow also it is actually meaningless to have a half-an-hour discussion on the Health Ministry. It is utterly meaningless.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Can we take it up today?

SHRIMATI JAYANTHI NATARA-JAN: I dont know, Madam, if the Members wont to take it up today.

श्री संघ प्रिय गौतम (उत्तर प्रदेश): मेरा ख्याल है कि पांच-सात मिनट लगेंगे, आज ही ले लेते हैं ।

Problems of the Medkal Students

श्रीमती मालती शर्मा (उत्तर प्रदेश) : महोदया, मैं आपके माध्यम से सरकार का ध्यान दिल्ली के उन विद्योर्थियों की कठिनाईयों की ओर आकृषित करना चाहती हूं जिन्होंने केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, नई दिल्ली द्वारा आयोजित प्रीमेडिकल परीक्षा उत्तीर्ण की थी तथा जिन्हें महा-निदेशक, केन्द्रीय स्वास्थ्य सेवा द्वारा दिल्ली के बाहर मेडिकल कालेजों में सीट आबंटन की थी । यह छात्र दिल्ली विश्व विद्यालय द्वारा आयोजित प्री-पोस्ट ग्रेज्युएट मेडिकल परीक्षा के लिए अब अयोग्य बताए जा रहे है, क्योंकि इन्होंने एम०बी०बी०एस० दिल्ली के बाहर स्थित मेडिकल कालेजों से उत्तीर्ण की है, यद्यपि उन्होंने 10+2 की परीक्षा दिल्ली के स्कूलों से ही पास की थी तथा वे दिल्ली के स्थाई निवासी हैं । ये छात्र उन राज्यों की प्री-पोस्ट ग्रेज्यूएट मेडिकल परीक्षा भी नहीं दे सकते हैं, जहां के मेडिकल कालेजों से उन्होंने एम०बी०बी० एस० परीक्षा उत्तीर्ण की है, क्योंकि पंजाब, हिमाचल प्रदेश, बिहार, तमिलनाडु, केरल, गुजरात, आसाम, उड़ीसा आदि राज्यों में वही छात्र इन परीक्षा में बैठ सकते हैं, जो उन राज्यों के स्थाई निवासी हैं । यह छात्र उनमें नहीं बैठ सकते हैं ।

इन परिस्थितियों में मेरा सरकार से अनुरोध है कि इन छात्रों की उपरोक्त कठिनाईयों के निवारण हेतु दिल्ली विश्व-विद्यालय को समुचित निर्देश दें ताकि यह छात्र दिल्ली के जो मूल निवासी हैं, इन्हें न तो अब वह सरकार अपने यहां